रिकॉर्डः– रात के राही..... "ऊँ" पिताश्री 15/8/1965

ओम शान्ति। यह गीत जैसे कि बच्चों ने बनाया है। गीत का अर्थ तो कोई भी जान ना सके। बच्चे जानते हैं अब घोर अंधियारा पूरा होता है। धीरे–2 अंधियारा होता गया है। इस समय कहेंगे घोर अंधियारा। अभी तुम राही बने हो सोझरे में जाने लिए अथवा अपने शान्तिधाम, पिअर घर जाने लिए। वो है पावन पिअर घर और यह है पतित पिअर घर। पतित पिअर घर कहेंगे प्रजापिता ब्रह्मा का घर। प्रजापिता में जो पिऊ बैठा है उनको तुम बाप कहते हो। यह तुमको पवित्र बनाए फिर अपने घर ले जाते हैं। पिता वो भी है तो यह भी है। वो है निराकार, यह है साकार। बच्चे–2 कहने वा(ला) बेहद के बाप के सिवाय और कोई हो ना सके। बाप ही कहते हैं; क्योंकि बच्चों को साथ में घर ले जा(ता) है पवित्र गुल–2 बनाए और नॉलेज दे। बच्चे समझते हैं पवित्र ज़रूर बनना है। बाप को याद करना है औ(र) फिर सारे सृष्टिचक्र को याद करना है। इस ज्ञान से तुम एवर वेल्दी बनते हो। कोई कहते हैं हमारे (लिए) कोई सेवा। बोलो, सेवा यही है, तीन पैर पृथ्वी के देकर इसमें रूहानी हॉस्पिटल और रूहानी कॉलेज खोलो। तो उनपर कोई बोझा भी नहीं पड़ेगा। इसमें माँगने की तो बात ही नहीं। राय देते हैं, अगर तुम्हारे पास पैसे हैं तो रूहानी हॉस्पिटल खोलो। ऐसे भी बहुत हैं जिनके पास पैसे नहीं हैं। वो भी हॉस्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोल सकते हैं। आगे चल तुम देखेंगे बहुत हॉस्पिटल खुल जावेंगी। तुम्हारा नाम अविनाशी सर्जन लगा हुआ होगा। रूहानी सर्जन और प्रोफेसर। रूहानी कॉलेज वा हॉस्पिटल खोलने में कुछ भी खर्चा नहीं है। मेल अथवा फिमेल दोनों रूहानी सर्जन अथवा प्रोफेसर बन सकते हैं। आगे फिमेल नहीं बनती थी। व्यवहार कार्य पुरुषों के हाथ में थे। आजकल माताएँ निकली हैं। तो अब तुम भी यह रूहानी सर्विस करती हो। ज्ञान की चटक लगी हुई हो फिर किसको समझाना बड़ा सहज है। घर पर बोर्ड लगा दो। कोई बड़ी हॉस्पिटल, कोई छोटी भी होती है। अगर देखो बड़ी हॉस्पिटल में ले जाने जैसा पेशन्ट है तो बोलना चाहिए– चलो, आपको बड़ी हॉस्पिटल ..... वहाँ बड़े–2 सर्जन हैं। छोटे सर्जन बड़े सर्जन के लिए राय देते हैं। अपना..... लेते हैं। फिर समझते हैं यह मरीज़ ऐसा है, जिसको बड़ी हॉस्पिटल में ले जाना चाहिए। ऐसी राय देते हैं। तो ऐसे सेन्टर खोल बोर्ड लगा दो। तो मनुष्य वण्डर खावेंगे। यह तो कॉमन समझने की बात है। कलियुग के बाद सतयुग ज़रूर आना है। भगवान बाप ही नई दुनिया स्थापन करने वाला है। ऐसा बाप मिल जाए तो क्यों ना हम वर्सा लेवे। मन, वचन, कर्म से भारत को सुख देना है। मन, वचन, कर्म। सो भी रूहानी मंसा अर्थात् याद और वचन तो सुनाते ही दो हैं। मनमनाभव, मद्याजी भव। बाप को और वर्से को याद करो। दो अक्षर हुए ना। वर्सा कैसे लिया, फिर कैसे गँवाया, यह है चक्र का राज़। बड़ी सहज बात है। बुढ़ियों को भी शौक होना चाहिए। बोलना चाहिए हमको सिखलाओ। बूढ़ी–2 भी ऐसे समझा सकती हैं, जो और कोई विद्वान–पंडित समझा ना सके। तब तो नाम बाला करेंगे। चित्र भी बहुत सहज है। कोई की तकदीर में ना है तो पुरुषार्थ करते नहीं हैं। सिर्फ ऐसे नहीं समझना है कि मैं तो बाबा की हो गई। वो तो आत्माएँ बाप की हैं ही। आत्माओं का बाप परमात्मा है। यह तो सेकण्ड की बात है; परन्तु उनसे वर्सा कैसे मिलता है, वो कब आते हैं, यह समझना है। आवेंगे भी संगमयुग पर। समझाते हैं, तुमने सतयुग में इतने जन्म लिए, त्रेता में इतने जन्म। 84 का चक्कर पूरा किया, अब फिर से नई दुनिया की स्थापना होनी है। सतयुग में दूसरे धर्म होते नहीं। कितना सहज है। दूसरे को समझाने से खुशी बहुत होगी, तन्दरुस्त हो जावेंगे; (क्यों)कि आशीर्वाद भी मिलेगी ना। बुढ़ियों के लिए तो बहुत सहज है। यह दुनिया की अनुभवी भी हैं। यह किसको बैठ समझावें तो कमाल कर दिखावे। सिर्फ बाप को याद करना है और बाप से वर्सा लेना है। जन्म लिया और मुख से मम्मा–बाबा कहना निकलता है। तुम्हारे तो ऑरगंस बड़े हैं। तुम तो समझ और समझा सकती हो। बुढ़ियों को बहुत शौक होना चाहिए– हम बाबा का नाम तो बाला करें और (ब)हुत मीठा बनना है। मोह, ममत्व निकल जाना चाहिए। मरना तो है ही, बाकी दो/चार रोज़ जीना है। तो

क्यों ना हम एक से बुद्धियोग रखें। जो भी समय मिले बाप की याद में रहें और सब तरफ से ममत्व मिटा देवें। 60 वर्ष के जब होते हैं तो फिर वानप्रस्थ लेते हैं। वो तो बहुत अच्छा समझ सकते हैं। नॉलेज धारण कर फिर दूसरों का भी कल्याण करना है। अच्छे–2 घर की बच्चियाँ ऐसे पुरुषार्थ कर और घर में बैठ समझावे तो कितना नामाचार निकाले। पुरुषार्थ कर सीखना चाहिए। शौक रखना चाहिए। यह नॉलेज बड़ी वण्डरफुल है। बोलो, देखो, अभी कलयुग पूरा होता है। मौत सामने खड़ा है। कलियुग के अंत में ही बाप आकर स्वर्ग का वर्सा देते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे, वह तो छोटा बच्चा है। उनको यह सतयुग का राज्य कैसे मिला? ज़रूर पास्ट जन्म में ऐसा कर्म किया होगा। मनुष्य तो कुछ भी नहीं समझते। तुम बच्चे समझ सकते हो बरोबर इन्होंने पुरुषार्थ से यह प्रालब्ध बनाई है। कलियुग में पुरुषार्थ किया है, सतयुग में प्रालब्ध पाई है। वहाँ तो पुरुषार्थ कराने वाला कोई गुरु–गोसाईं होता नहीं। तो सतयुग–त्रेता (की) इतनी जो प्रालब्ध मिली है, ज़रूर ऊँच ते ऊँच बाप मिला है, जो ही गोल्डन–सिलवर एज का मालिक बनाते हैं। और कोई बना ना सके। ज़रूर बाप ही मिला है। ल०ना० खुद तो नहीं मिलेगा। ऐसे भी नहीं, ब्रह्मा वा शंकर मिला। नहीं। भगवान मिला। वो है निराकार। भगवान के सिवाय तो कोई है नहीं जो ऐसा पुरुषार्थ करावे। भगवानुवाच्य मैं तुम्हारी प्रालब्ध फर्स्ट क्लास बनाता हूँ। यह आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। स्थापना यहाँ ही करनी है। करने वाला एक ही बाप है। और जो धर्म स्थापन करते हैं वो तो एक/दो के पिछाड़ी आते रहते। धर्म स्थापन करने वाले प्रालब्ध बना जाते हैं। बाप को तो अपनी प्रालब्ध नहीं बनानी है। अगर प्रालब्ध बनाए तो फिर उनको भी पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। शिवबाबा कहते हैं मुझे कौन पुरुषार्थ करावेगा। मेरा पार्ट ही ऐसा है। मैं बादशाही नहीं करता हूँ। यह ड्रामा बना–बनाया है। बाप .....ते हैं– बच्चे, मैं तुमको सभी वेद–शास्त्रों का सार समझाता हूँ। यह सब है भक्तिमार्ग। ..... (भक्तिमार्ग) पूरा होता है। वो है उतरती कला। अब तुम्हारी होती है चढ़ती कला। ..... चढ़ती कला सबका भला। सभी मुक्ति–जीवनमुक्ति को पा लेते हैं। फिर पीछे सभी 16 कला से उतरते–2 नो कला में आना है। ग्रहण लग जाता है ना। ग्रहण थोड़ा–2 होकर लगता है। यह तो है बेहद की बात। अभी तुम सम्पूर्ण बनते हो, फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है, थोड़ा काला बन पड़ते हैं। इसलिए पुरुषार्थ सतयुग की राजाई लिए करना चाहिए। कम क्यों लेवें; परन्तु सभी तो इम्तिहान पास कर नहीं सकते, जो 16 कला सम्पूर्ण बनें। बच्चों को पुरुषार्थ करना और कराना है। इन चित्रों पर बहुत अच्छी सर्विस हो सकती है। बड़ा क्लीयर लिखा हुआ है। बोलो, बाप स्वर्ग की रचना रचते हैं तो फिर हम नर्क में क्यों पड़े हैं। यह पुरानी दुनिया नर्क है ना। इसमें दुख ही दुख है। फिर ज़रूर नई दुनिया सतयुग आना चाहिए। ऐसा हो नहीं सकता (द्वापर) खड़ा हो जाए। सतयुग को ज़रूर आना है। बच्चे निश्चय बुद्धि हैं। यहाँ अंधश्रद्धा की बात नहीं। कोई भी कॉलेज में अंधश्रद्धा नहीं होती है। एम–ऑब्जेक्ट सामने खड़ा है। उन कॉलेजों में इस जन्म में पढ़ते हैं, इस जन्म में ही प्रालब्ध पाते हैं। यहाँ इस पढ़ाई की प्रालब्ध विनाश के बाद दूसरे जन्म में तुम पावेंगे। देवताएँ कलियुग में आ ना सके। बच्चों को समझाना बड़ा सहज है। चित्र भी बड़े अच्छे बनाए हुए हैं। 6×... का बड़ा चित्र (त्रिमूर्ति–गोला) कोई बड़े स्टेशन पर रखा हुआ हो जो बहुत लोग देखेंगे। यूँ तो झाड़ भी बहुत अच्छा है। क्रिश्चियन लोग भी झाड़ को मानते हैं। खुशी मनाते हैं अपने नेशन की। सबका अपना–2 पार्ट है। यह भी जानते हो, भक्ति आधा कल्प होनी है। इसमें यज्ञ–तप–तीर्थ आदि सब होते हैं। बाप कहते हैं मैं इनसे नहीं मिलता हूँ। जब तुम्हारी भक्ति पूरी होती है तब भगवान आते हैं। भक्ति की जब एण्ड होती है तब मैं आता हूँ। आधा कल्प है ज्ञान, आधा कल्प है भक्ति। झाड़ में क्लीयर लगा हुआ है, सिर्फ चित्र हो बिगर लिखत। उस पर भी अच्छी रीति समझा सकते हैं। लिखत की दरकार है नहीं। चित्रों ऊपर ही अटेन्शन देना है। इनमें कितनी (अधूरी मुरली)